भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1326

11.12.2025 को उत्तर के लिए

हिम तेंदुए का संरक्षण

1326. श्री मिलिंद मुरली देवराः

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने ''23 फॉर 23'' पहल के अंतर्गत पहली राष्ट्रव्यापी हिम तेंदुआ गणना पूरी कर ली है;

(ख) यदि हां, तो इसके मुख्य निष्कर्ष क्या हैं तथा हिमालयी राज्यों में हिम तेंदुओं की कितनी अनुमानित संख्या दर्ज की गई है;

(ग) बजट आवंटन, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और निगरानी ढांचे सहित मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित अनुवर्ती संरक्षण कार्य योजना का ब्यौरा क्या है; और

(घ) उच्च तुंगता वाले पारिस्थितिकी तंत्रों की दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और हिम तेंदुए वाले क्षेत्रों में पर्यावास निम्नीकरण को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) भारत सरकार ने पहली राष्ट्रव्यापी हिम तेंदुओं की आबादी की गणना पूरी कर ली है। वर्ष 2019 और 2023 के दौरान आधिकारिक तौर पर भारत में हिम तेंदुए की आबादी का आकलन (एसपीएआई) शीर्षक से यह आकलन किया गया है, और इसके निष्कर्ष 30 जनवरी 2024 को जारी किए गए थे।

(ख) भारत में हिम तेंदुए की आबादी के प्रथम आकलन (एसपीएआई) के निष्कर्षों के अनुसार, देश में हिम तेंदुओं की कुल अनुमानित आबादी 718 है। इनकी अधिकतम संख्या लद्दाख (477) में दर्ज की गई, और इसके बाद उत्तराखंड (124), हिमाचल प्रदेश (51), अरुणाचल प्रदेश (36), सिक्किम (21) और जम्मू और कश्मीर (9) में दर्ज की गई है।

एसपीएआई भारत में हिम तेंदुओं की आबादी का पहला व्यवस्थित, वैज्ञानिक मूल्यांकन है और इसमें लगभग 1,20,000 वर्ग किमी की ऊंचाई वाले पर्यावास को शामिल किया गया है, जो प्रजातियों की संभावित सीमा के 70% से अधिक है। इस प्रक्रिया में एक कठोर दो-चरणीय रूपरेखा अपनाई गई है, जिसमें विभक्त क्षेत्रों में कैमरा-ट्रैप आधारित प्रचुरता अनुमान के साथ स्थानिक वितरण का रेखाकंन करने के लिए उनकी आबादी आधारित नमूनाकरण को जोड़ा गया। सर्वेक्षण टीमों ने कुल मिलाकर 13,450 किमी के ट्रांसैक्ट पर चलकर चिन्ह सर्वेक्षण किया और 1,971 स्थानों पर कैमरा ट्रैप लगाए, जिससे लगभग 1,80,000 रातों के चिन्ह ट्रैप

किए और 241 भिन्न-भिन्न हिम तेंदुओं की पहचान की गई। यह प्रयास भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्लयूआईआई), देहरादून द्वारा भी हिम तेंदुओं की आबादी वाले राज्यों/संघ राज्य-क्षेत्रों और स्थानीय स्तर के गैर सरकारी संगठनों जैसे संरक्षण सहभागियों की भागीदारी के साथ समन्वित किया गया था।

(ग) से (घ) मंत्रालय, अभिज्ञात प्रजातियों के सकेंद्रित संरक्षण के लिए वन्यजीव पर्यावासों के विकास की केंद्र प्रायोजित योजना के तहत प्रजाति रिकवरी कार्यक्रम के अंतर्गत, राज्य सरकारों और संघ राज्य-क्षेत्र प्रशासनों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है। हिम तेंदुआ इस कार्यक्रम के तहत पहचानी गई 24 प्रजातियों में से एक है।

भारत में हिम तेंदुए की आबादी का आकलन (एसपीएआई) मंत्रालय की अनुवर्ती संरक्षण कार्य योजना का आधार है, जो अधिक ऊंचाई वाले परिदृश्यों में मजबूत आबादी निगरानी, संरचित वैज्ञानिक आकलन और संवर्धित सामुदायिक भागीदारी पर जोर देता है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) ने वन्यजीव सप्ताह 2025 के दौरान हिम तेंदुए, उसके पर्यावास और उससे जुड़ी प्रजातियों के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत संरचना सहित एसपीएआई 2.0 का दूसरा चरण शुरू किया है।

एमओईएफ़सीसी ने राष्ट्रीय हिम तेंदुआ पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण प्राथमिकताओं (एनएसएलईपी) के अंतर्गत, हिम तेंदुए के संरक्षण हेतु कई मुख्य कार्यों को प्राथमिकता दी है। भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ़सीसी) ने हिम तेंदुआ परियोजना (पीएसएल) के निर्माण और शुभारंभ के लिए राज्यों और विभिन्न एजेंसियों के साथ परामर्श की प्रक्रिया शुरू की। ऊंचाई पर स्थित हिमालयी पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा, हिम तेंदुए जैसे लुप्तप्राय वन्यजीवों का संरक्षण, और स्थानीय समुदायों की आजीविका में सुधार करने के लिए सेक्यूर हिमालय नामक एक पहल भी शुरू की गई है। भारत में वन्यजीवों के लिए सख्त कानून हैं और हिम तेंदुए को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत उच्चतम संरक्षण स्थिति, अर्थात अनुसूची I में स्थान प्रदान किया गया है। हिम तेंदुए के बसने वाले भू-परिदृश्यों में पर्यावास क्षरण को रोकने के लिए मंत्रालय की रणनीति दीर्घकालिक, विज्ञान-आधारित प्रबंधन पर आधारित है। हिमाचल प्रदेश में कोल्ड डेजर्ट बायोस्फीयर रिजर्व की स्थापना, जिसे यूनेस्को के बायोस्फीयर रिजर्व के वैश्विक नेटवर्क में शामिल किया गया है, एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नंदादेवी और कंचनजंगा बायोस्फीयर रिजर्व के अतिरिक्त, 7770 वर्ग किमी के हिम तेंदुए के पर्यावास को सामुदायिक भागीदारी के साथ सुरक्षित करता है।

अधिक-ऊंचाई वाले पारिस्थितिक तंत्रों की दीर्घकालिक सुरक्षा संरक्षित क्षेत्रों के विस्तार और बेहतर प्रबंधन, परिदृश्य-स्तर के संरक्षण नियोजन, समुदाय-आधारित प्रबंधन कार्यक्रमों पर्यावास क्षरण को रोकने के उपायों, जिन्हे वैज्ञानिक निगरानी और अंतर-एजेंसी समन्वय द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है।

*****